कुमाऊँनी लोक कला का मांगलिक एवं अनुष्ठानिक स्वरूप

डॉ० विनिता दहिया*

देवभूमि उत्तराखण्ड अपने नैसर्गिक सौन्दर्य तथा विविध संस्कृति के अनेकों आकर्षक इन्द्रधनुषी रंगों के साथ अपनी भव्यता को प्रदर्शित करती है। परम्परागत रीति–रिवाज, संस्कार, पर्व एवं उत्सव आदि यहां की संस्कृति के अभिन्न अंग है और इन सभी में लोककला के विभिन्न रूपों में दर्शन होते हैं।

लोक कलाओं को विधिवत कहीं सीख नहीं जाता। यह अपने परम्परागतरूप में विभिन्न पर्वों और धार्मिक अनुष्ठानों पर अभिव्यक्ति पाती रहती है लोक कलाओं में प्रस्तुत होने वाले उपादानों का चयन भी सहज प्राप्त आवश्यक साम्रगी से कर लिया जाता है। धार्मिक आस्था और विश्वास रीति और रिवाजों को अपने परम्परागत रूप में चलाने के लिए ही लोक कलाकार है।

कुमाऊँ का कोई भी पारिवारिक मांगलिक कार्य हो, पूजा–अनुष्ठान, तीज–त्योहार या पर्व बिना लोक चित्रण के सम्पन्न नहीं होता। कुमाऊँ के अपने पर्वोत्सवों तथा व्रतोंत्सवों की ऐसी लम्बी श्रृंखला है जिसमें वर्ष का कोई महीना ऐसा नहीं जिसमें इनका किसी न किसी रूप में आंकलन किया जाता हो। चैत कृष्णपक्ष (नव वर्षारम्भ) में सामान्य देहरी ऐपण, शुक्ल पक्ष (नवरात्रों) में नवदुर्गा थापे, बैशाख में दो त्रिभुजों वाली भगवती, ज्येष्ठ में वटसवित्री के व्रत में सत्यवान सावित्री एवं एकादशी को नौ स्वाज्ञितकात्मक रामनाम चौकी का अंकन, श्रवण में पार्थिव पूजा के सन्दर्भ में शिवपीठ का चित्रांकन, भाद्रपद में जन्माष्टमी पट्टे का अंकन आश्विन की नवरात्रियों में दुर्गाप पट्ट/पीठ तथा ओंकार को सृष्टि, पालन एवं संहार की देव–शक्तियों, बाहा, विष्णु, महेश और मंगलात्मक स्वास्तिक जिसे खोडिया, साथिया/सातिया भी कहा जाता है जिसे सभी मांगलिक कार्यों के एक अभिन्न अंग के रूप में अंकित किया जाता है। जिसकी चार भुजाओं को चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) चार वेदों, चार दिशाओं, चार युगों तथा चार आश्रमों का प्रतीक माना जाता है।

कुमाऊँनी कला में ऐपण का एक विशिष्ट स्थान है। यह यहां की सीमित लोक परिधि में सीमित होने पर भी कलात्मक रूपों की सर्वाधिक लोक चर्चित कला है। यहां का कोई भी लोकोत्सव, पर्वोत्सव एवं धार्मिक उत्सव ऐसा नहीं जिसका शुभारम्भ इस चित्रांकन से प्रारम्भ न किया जाता हो।

मांगलिक धरातलीय ऐपण (अल्पना या आलेपन): अल्पना से विकसित ऐपण शब्द की व्युत्पित्ति 'आलेपन' (लीपना) से हुई हे। ऐपण के अंकन के लिए गेरू अथवा लाल मिट्टी और 'बिस्वार' (भगाकर पीसे गये चावलों का घोल) से हाथ की अंगुलियों, मिट्ठी, हथेली तथा कई, सींक के माध्यम से किया जाता है। (अल्पना या आलेपन) अल्पना से विकसित ऐपण शब्द की व्युत्पित्ति 'आलेपन' (लीपना) से हुई हे। ऐपण के अंकन के लिए गेरू अथवा लाल

* एम.के.पी.(पी.जी) कालेज, देहरादून।

मिट्टी और 'बिस्वार' (भगाकर पीसे गये चावलों का घोल) से हाथ की अंगुलियों, मिट्ठी, हथेली तथा कई, सींक के माध्यम से किया जाता है।

ऐपण में कुशल महिलाएं उपर्युक्त उपकरणों की सहायता से विभिन्न प्रकार की सरल एवं ज्यामितीय रेखाओं से अनेक तांत्रिक प्रतीकों तथा मांगलिक प्रतीकों शंख, चक्र, स्वास्तिक, कमल, सूर्य, चन्द्र, मत्स्य, गज, वृक्ष लता, त्रिशूल आदि का अंकन करती है। इन सभी का अनुष्ठानिक एवं मांगलिक महत्व होने के कारण सभी पर्वोत्सवों एवं अनुरूठानिक उत्सवों पवर अंलकारिक चित्रण किया जाता है।

द्वारस्थलीय ऐपण– प्रवेश द्वार के अधस्तल (देहली) पर किये जाने वाले ऐपणों को देहली ऐपण या 'देहली' (धई) लिखना कहा जाता है। इनमें प्रकृति के फूल पत्ती व अन्य चिंह्नों का सुन्दर चित्रण किया जाता है। कुमाऊँ में ऐसा कोई पर्वोत्सव नहीं जिसमें देहली ऐपण न किया जाता हो। पूजन स्वंय एक स्वतंत्र उत्सव के रूप में पूरे महीने मनाया जाता है।

द्वारस्तम्भीय ऐपण – विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर द्वारस्तम्भों (चौखटों) पर किये जाने वाले ऐपणों का प्रचलन अधिकतर कुमाऊँ के पूर्वोत्तरीय क्षेत्रों में है। इन ऐपणों में द्वार स्तम्भों को गेरू से लीप कर सीकों के माध्यम से उन पर मांगलिक चिन्हें – सूर्य, चन्द्रमा, गणेश, कलश, गज, मत्स्य आदि का अंकन किया जाता है। विवा के अवसर पर वर–वधु इसका पूजन करने के उपरान्त ही घर के अन्दर प्रवेश करते है।

अनुष्ठानिक धरापटलीय ऐपण – अनुष्ठानिक धरापटलीय ऐपणों के अनेक रूप होते हैं जिनमें कुछ का विवेचन इस प्रकार है।

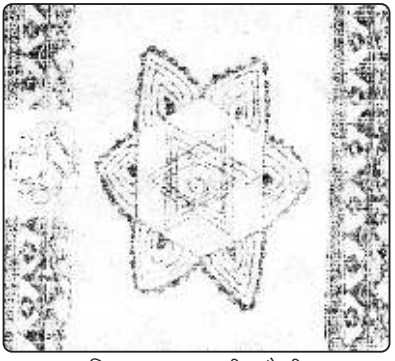

चित्र 1: सरस्वती चौकी

पीठ और चौकी– पीठ संस्करोत्वों तथा देवपूजा के अवसरों पर देवी–देवताओं के स्वागत के लिये बनाये जाने वाले ऐपणों को चौकी कहा जाता है। प्रत्येक देवता की चौकी का रूप, अंकन विधि तथा उसमें बनाये जाने वाले मंगल प्रतीकों एवं अलंकरणत्क तत्वों का अपना अलग स्वरूप होता है। विभिन्न अनुष्ठानिक अवसरों पर बनाये जाने वाली चौकियों में सरस्वती चौंकी (चि.सं. 1) दुर्गा चौकी, लक्ष्मी चौकी, महादेव की चौकी (शिव पीठ) धूलिअर्ध (चि.सं. 2) षष्ठी की चौकी आदि का प्रतिकात्मक अंकन करके उनकी पूजा की जाती है। इन ऐपणों की अंकन विधि और अंकन सामग्री अधिकतर एक जैसी होती है। परन्तु इनका कार्तिक में लक्ष्मी का एवं लक्ष्मी पौ का अंकन, गोवर्धन पट्ट आदि। मार्गशीर्ष में हरिबोधिनी एकादशी के दिन सूप पर भुइयां/धुइंया (चित्र सं. 3) तथा लक्ष्मी नारायण का अंकन, पौष संक्रानित को सामान्य ऐपण, तथा माघ की

चित्र 2: अर्धधूली चौकी

संक्रान्ति को सामान्य अंकन तथा पंचमी (बसन्त पंचमी) को सरस्वती चौकी का चित्रण, फाल्गुन में, शिवरात्रि को शिवनीठ का चित्रांकन किया जाता है।

शुभानुष्ठानों और मंगल पर्वों के लिए जैसे जन्म दिवस नामकरण, जनेऊ संस्कार बालक के पठन–पठन का शुभारम्भ, पाणिग्रहण संस्कार आदि। इन अवसरों पर तान्त्रिक प्रतीक चिह्नों का प्रयोग करके पूजा के लिए आवश्यक देवी–देवताओं

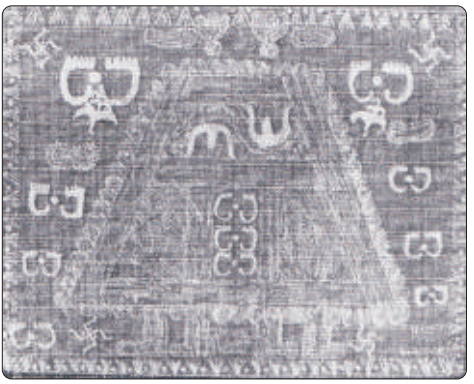

चित्र 3: भुइयां

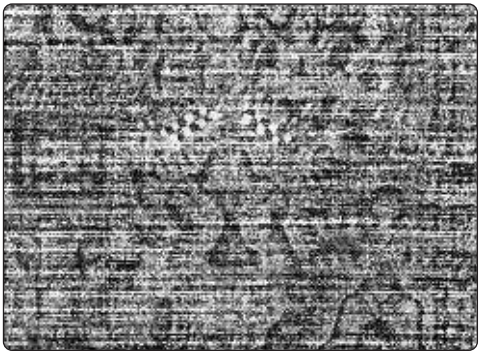

चित्र 4: थापा

जैसे सूर्य–सरस्वती, ब्रह्मा–विष्णु, महेश–महालक्ष्मी, लक्ष्मी–नारायण आदि के यन्त्र, चौकी पाठी, थापा और नात (चित्र सं० 4) का चित्रण एवं आलेखन किया जाता है ये तान्त्रिक चिह्न वास्तव में ज्यामितीय आकार जैसे त्रिकोण, वर्ग वृत्त इत्यादि होते है। तन्त्र विद्या में इन आकारों में शिव और शक्ति, विश्व और पृथ्वी की कल्पना की गई।

त्रिभुज या त्रिकोण, जिनका अंकन उर्ध्वमुखी (Δ) एवं अधोमुखी (∇) दोनों रूपों में किया जाता है। इसमें उर्ध्वमुखी को पर्वत, अग्नि एवं शिव का तथा अधोमुखी को जल, शक्ति और स्थिरता का प्रतीक माना जाता है और कुछ लोक चित्रों अंकित किये जाने वाले चित्रांकन अलग–अलग वर्तोत्सव, पर्वोत्सव और मांगलिक कार्यों में किया जाता है। जैसे–षष्ठी चौकी, शिशु के जन्म के छठे दिन मानये वाले उत्सव (षष्ठी महोत्सव) के दिन की जाती है। शिवपीठ पार्थिवपूजा (मिट्टी द्वारा बनाये गये शिव लिंगों की पूजा) के अवसर पर शिवपीठ की रचना की जाती है। यह अपनी आर्थिक सामर्थ्य और श्रद्धा के अनुसार मिट्टी के 28 से लेकर 11000 शिवलिंग स्थिापित करके परिवार कल्याण और पुत्र प्राप्ति के लिये पूजा की जाती है।

चित्र 5: डिकरा

कुछ मिट्टी द्वारा बनायी गयी मूर्तियां डिकरा के नाम से भी जानी जाती है। (चित्र सं. 5) जिन्हें कुमाऊँनी स्त्रियां हरियाली के पर्व पर बनती है। ''हरियाला' वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में सावन के प्रथम दिवस कर्क संक्राति को मनाया जाता है। यह शिव पार्वती के विवाह का दिन माना जाता है। स्त्रियां इसे बड़े जोश और भक्ति के साथ बनाती है।

दीपावली के शुभ पर्व पर लक्ष्मी के पूजन के लिए ऐपण में छोटे–छोटे पद चिह्न आकृतियां बनाई जाती है (चित्र सं. 6) प्रवेश देहरी से लेकर पूरे घर में लक्ष्मी के स्वागत और आगमर की कामना स्वरूप ये चरण चिह्न बनाये जाते है। दीपावली के अवसर पर ही महिलाएं सूप (छांज) पर भी गेरू का लाल लेप कर सुखा लेती है सूखने पर लक्ष्मी नारायण का स्मारण करके कटोरे में ''बिस्वार'' लेकर उनका प्रतीकात्मक चित्रण करती है और अपने परम्परागत रूप में आज भी चित्रांकन किया जाता है। कुमाऊँनी स्त्रियां ही इस कला की वास्तविक सृजनकर्ता है।

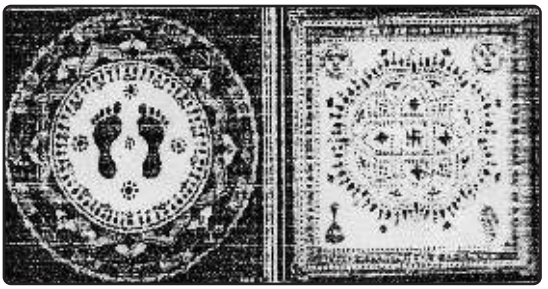

चित्र 6: दीपावली

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. उत्तराखण्ड का लोक साहित्य और जनजीवन। – डॉ. सरला चन्दोला
2. कुमाऊँ का इतिहास – बी.डी. पाण्डे
3. उत्तराखण्ड की लोक कलाएं एवं शिल्प कौशल – प्रो. डी.डी. शर्मा
4. संस्कृति विज्ञान की रूप–रेखा – डॉ. एच.एल. शर्मा
5. भारतीय चित्रकला का विवेचन – आर.ए. अग्रवाल
6. पौराणिक उत्तराखण्ड – डॉ. राजेश मोहन नौटियाल
7. पहाड़ी चित्रकला – वैद्य किशोरी लाल
8. गढ़वाल पेन्टिग – मुकन्दी लाल
9. फ़ोक आर्ट ऑफ कुमाऊँ – नत्थूराम उप्रेती
10. कुमाऊँनी लोक कला संस्कृति और परम्परा – कृष्ण बैराठी एवं सत्येन्द्र कुश